



# पत्र-पुष्प



HAPPY NEW YEAR 2018

**निमित्त टीचर्स तथा सर्व ब्राह्मण कुल भूषण भाई बहिनों प्रति मधुर याद पत्र  
(15-12-17)**

प्राणप्यारे अव्यक्त बापदादा के नयनों के नूर, सदा विजय माला में पिरोने वाले, अपनी सम्पन्नता और सम्पूर्णता की स्थिति द्वारा प्रत्यक्षता को समीप लाने वाले, निमित्त टीचर्स बहिनें तथा एक की लगन में सदा मग्न रहने वाले देश विदेश के सभी तीव्र पुरुषार्थी ब्राह्मण कुल भूषण भाई बहिनें,

ईश्वरीय स्नेह सम्पन्न मधुर याद के साथ नये वर्ष की सबको कोटि-कोटि बधाईयां।

नये युग के आगमन की स्मृति दिलाते हुए अभी नया वर्ष 2018 समीप आ गया है। कितना अच्छा गीत है नया दिन लागे, नई रात लागे... सब कुछ नया नया लगता है। अभी तो समय की समीपता प्रमाण अपने नये युग के नज़ारे सम्मुख दिखाई दे रहे हैं। एक ओर हाहाकार तो दूसरी ओर जयजयकार, कैसे गुप्त रूप में बाबा अनेकों के दिलों में प्रत्यक्ष होता जा रहा है। बाबा के बच्चों का उमंग-उत्साह, पुरुषार्थ की लगन और सेवाओं का विस्तार देख वाह अव्यक्तवतन वासी बाबा वाह! के गीत दिल से निकलते, कैसे बाबा करनकरावनहार बन बेहद विश्व परिवर्तन का महान कार्य अपने बच्चों द्वारा करा रहे हैं। कमाल है मीठे बाबा की और निश्चय बुद्धि विजयी बाबा के बच्चों की। समय प्रमाण सब अपना तन-मन-धन विश्व कल्याण की सेवा में सफल करते सफलता भव के वरदानी बन गये हैं। बाबा कहते बच्चे अपना एक एक सेकण्ड, एक एक श्वास और संगम के समय को सफल करते चलो तो सफलता आपके हर कदम में समाई हुई है। अब सदा निश्चय बुद्धि विजयंती होकर रहो, जरा भी देह के भान का अंश भी न रहे, कम्पलीट देही-अभिमानि बनो। ऐसा रहने से दिल खुश, दिमाग ठण्डा, स्वभाव सरल हो जायेगा।

हमारे मीठे-मीठे भाई बहिनें, अभी एक बात सभी ध्यान पर रखो कि किसी के भी स्वभाव को देख उससे मुँह नहीं मोडना, मिलनसार बनकर चलना है। जिसमें कोई भी कमी है तो उसे समाप्त कर अब बाबा के सामने हाज़िर होना है ताकि बाबा खुश होकर कहे यह मेरा बच्चा ज्ञानी तू आत्मा मुझे अति प्रिय है। दूसरा - जो करना है अब कर लो, कोई भी कार्य कल पर नहीं रखना। हमारी बुद्धि इतनी साफ-स्वच्छ हो जो समय प्रमाण बाबा की टचिंग को कैच कर सके। हमें अपने जीवन की रक्षा स्वयं करना है, स्वयं को कभी दुःखी होने नहीं देना, यही सच्ची सेवा है। सेवा में विशेष रहम, कृपा, दया का गुण बहुत काम आता है। लेकिन समय अनुसार अभी तीन बातों पर अटेन्शन जरूरी है, एक हमारी दिल सच्ची हो जो साहेब राज़ी रहे। दूसरा हिम्मत बच्चे मददे बाप, इसका अनुभव तो वन्दरफुल है। तीसरा - त्याग में ही भाग्य है, त्याग है तो तपस्या स्वतः होगी। अब तपस्या से सारे विकर्म विनाश करने हैं। सेवाओं में इतने बिजी नहीं हो जाओ जो तपस्या के लिए टाइम ही न रहे। टाइम को सफल करने का लक्ष्य हो। अन्तर्मुखी सदा सुखी। एकांतप्रिय, एकाग्रता की शक्ति से साक्षात् बाप समान बनने की भावना है तो बाबा हमारी भावना पूरी करता है। यह बाबा वन्दरफुल है, अन्तर्यामी है। बाबा न सिर्फ मुझे जानता, पहचानता है परन्तु अपने समान बना रहा है।

देखो, यह विशेष जनवरी मास और उसमें भी 18 जनवरी और 2018 का वर्ष, कितना विशेष है। इस वर्ष सभी ऐसी तपस्या करो जो 18 अध्याय की समाप्ति के साथ यह कलियुगी पर्वत सहज उठ जाए। परिवर्तन और प्रत्यक्षता के नगाड़े बजने लगे। बोलो, यही सबको उमंग है ना। अच्छा - सभी को बहुत-बहुत याद..

ईश्वरीय सेवा में,  
बी.के. जानकी



## ये अव्यक्त इशारे



“मन्सा सेवा के लिए मन को एकरस और शक्तिशाली बनाओ, डबल लाइट बनो”

1) मन को एकरस बनाने के लिए हर घण्टे 5 सेकण्ड वा 5 मिनट अपने पांचों ही रूप सामने लाओ और उस रूप का अनुभव करो। इस एक्सरसाइज से व्यर्थ वा अयथार्थ संकल्पों में मन नहीं जायेगा। मन में अलबेलापन भी नहीं आयेगा। मनमनाभव का मन्त्र मन के अनुभव से मायाजीत बनने में यन्त्र बन जायेगा।

2) जैसे मोटेपन को मिटाने का साधन है खान-पान की परहेज और एक्सरसाइज। वैसे यहाँ भी बुद्धि द्वारा बार-बार अशरीरीपन की एक्सरसाइज करो और बुद्धि का भोजन संकल्प है उनकी परहेज रखो, तो मन लाइट एकरस और शक्तिशाली बन जायेगा।

3) जैसे शारीरिक हल्केपन का साधन एक्सरसाइज है, वैसे आत्मिक एक्सरसाइज योग अभ्यास द्वारा अभी-अभी कर्मयोगी अर्थात् साकारी स्वरूपधारी बन साकार सृष्टि का पार्ट बजाना, अभी-अभी आकारी फरिश्ता बन आकारी वतनवासी अव्यक्त रूप का अनुभव करना – अभी-अभी निराकारी बन मूल वतनवासी का अनुभव करना, अभी-अभी अपने राज्य स्वर्ग अर्थात् वैकुण्ठवासी बन देवता रूप का अनुभव करना, ऐसे बुद्धि की एक्सरसाइज करो तो सदा हल्के हो जायेंगे। पुरुषार्थ की गति तीव्र हो जायेगी।

4) अभी-अभी आवाज में आना और अभी-अभी आवाज से परे हो जाना - जैसे आवाज में आना सहज लगता है वैसे यह भी सहज अनुभव हो क्योंकि आत्मा मालिक है। रुहानी एक्सरसाइज में सिर्फ मुख की आवाज से परे नहीं होना है। मन से भी आवाज में आने के संकल्प से परे होना है। मुख और मन दोनों की आवाज से परे रह शान्ति के सागर में समा जाओ।

5) किसी भी कर्म में बहुत बिज़ी हो, मन-बुद्धि कर्म के सम्बन्ध में लगी हुई है, लेकिन डायरेक्शन मिले-फुलस्टॉप, तो फुलस्टॉप लगा सकते हो कि कर्म के संकल्प चलते रहेंगे? फुलस्टॉप लगाने की प्रैक्टिस हर घण्टे में एक सेकण्ड के लिये भी करो लेकिन अभ्यास करते जाओ, क्योंकि अन्तिम सर्टीफिकेट एक सेकण्ड के फुलस्टॉप लगाने पर ही मिलना है। सेकण्ड में विस्तार को समा लो, सार स्वरूप बन जाओ।

6) जैसे स्थूल एक्सरसाइज से तन तन्दरूस्त रहता है। ऐसे चलते-फिरते अपने 5 स्वरूपों में जाने की एक्सरसाइज करते रहो। जब ब्राह्मण शब्द याद आये तो ब्राह्मण जीवन के अनुभव में आ जाओ। फरिश्ता शब्द कहो तो फरिश्ता बन जाओ। तो सारे

दिन में यह मन की ड़िल करो।

7) जब बाप समान बनना है तो एक है - निराकार और दूसरा है - अव्यक्त फरिश्ता। तो जब भी समय मिलता है सेकण्ड में बाप समान निराकारी स्टेज पर स्थित हो जाओ, फिर कार्य करते फरिश्ता बनकर कर्म करो, फरिश्ता अर्थात् डबल लाइट। कार्य का बोझ नहीं हो। तो बीच-बीच में निराकारी और फरिश्ता स्वरूप की मन की एक्सरसाइज करो तो थकावट नहीं होगी।

8) एक तरफ मन्सा सेवा, दूसरे तरफ मन्सा एक्सरसाइज। अभी-अभी निराकारी, अभी-अभी फरिश्ता। जैसे शरीर का नाम पक्का है। दूसरे को भी कोई बुलायेगा तो आप ऐसे-ऐसे करेंगे। तो मैं आत्मा हूँ, आत्मा का संसार बापदादा, आत्मा का संस्कार ब्राह्मण सो फरिश्ता, फरिश्ता सो देवता। तो यह मन की ड़िल करना। मैं आत्मा, मेरा बाबा।

9) कोई भी कार्य करते व पार्ट बजाते सागर समान ऊपर से भले हलचल दिखाई दे लेकिन अन्दर की स्थिति नर्धिग न्यु की हो। रचयिता और रचना के अन्त को जानने वाले त्रिकालदर्शी, आराम से शान्ति की स्टेज पर ऐसे स्थित हो जाएं जो कोई भी कर्मेन्द्रियों की हलचल आन्तरिक स्टेज को हिला न सके।

10) जब आत्मिक शक्ति वाली, सेमी प्योर आत्मायें अपनी साधना द्वारा आत्माओं का आह्वान कर सकती हैं, अल्पकाल के साधनों द्वारा दूर बैठी हुई आत्माओं को चमत्कार दिखाकर अपनी तरफ आकर्षित कर सकती हैं, तो परमात्म शक्ति अर्थात् सर्व श्रेष्ठ शक्ति क्या नहीं कर सकती परन्तु इसके लिए विशेष एकाग्रता का अभ्यास करते रहो।

11) जैसे शक्तियों के जड़ चित्रों में वरदान देने का स्थूल रूप हस्तों के रूप में दिखाया है, हस्त भी एकाग्र रूप दिखाते हैं। वरदान का पोज़ हस्त, दृष्टि और संकल्प एकाग्र दिखाते हैं, ऐसे चैतन्य रूप में एकाग्रता की शक्ति को बढ़ाओ, तब रूह, रूह का आह्वान करके रुहानी सेवा कर सकेगी।

12) अभी तक वाचा और कर्मणा की सेवा में जो तेरी-मेरी का, नाम, मान, शान का, स्वभाव, संस्कार का टकराव होता है, समय व सम्पत्ति का अभाव होता है, यह सर्व विघ्न एकाग्रता के अभ्यास द्वारा मन्सा सेवा करने से सहज समाप्त हो जायेंगे। रुहानी सेवा का एक संस्कार बन जायेगा।

13) जो भी आत्मायें वाणी द्वारा व प्रैक्टिकल लाईफ के प्रभाव द्वारा सम्पर्क में आई हैं, वा सम्पर्क में आने के उम्मीदवार हैं, उन आत्माओं को रुहानी शक्ति का अनुभव कराओ। जैसे भक्त लोग स्थूल भोजन का व्रत रखते हैं, तो सर्विसएबुल ज्ञानी तू आत्माओं को व्यर्थ संकल्प, व्यर्थ बोल, व्यर्थ कर्म की हलचल से परे एकाग्रता अर्थात् रुहानियत में रहने का व्रत लेना है तब आत्माओं को ज्ञान सूर्य का चमत्कार दिखा सकेंगे।

14) अभी एकाग्रता का दृढ़ संकल्प करने वाला ग्रुप तैयार होना चाहिए, जो सागर के तले में जाकर अनुभव के हीरे, मोती लेकर आये। लहरों में लहराने का अनुभव तो किया अब अन्दर तले में जाना है। अमूल्य खजाने तले में मिलते हैं, इससे आटोमेटिक सब बातों से किनारा हो जायेगा।

15) एकाग्रता की शक्ति बहुत विचित्र रंग दिखा सकती है। एकाग्रता से ही सिद्धियां प्राप्त होती हैं। स्वयं की औषधि भी एकाग्रता की शक्ति से कर सकते हो। अनेक रोगियों को निरोगी भी बना सकते हो। कोई ने चलती हुई चीज़ को रोका, यह एकाग्रता की सिद्धि है। स्टॉप कहो तो स्टॉप हो जाए तब वरदानी रूप में जय-जयकार के नगाड़े बजेंगे।

16) बुद्धि की एकाग्रता के लिए व्यर्थ वा अशुद्ध संकल्पों की हलचल से परे एक से सर्व रस लेने वाली एकरस स्थिति चाहिए। अगर अनेक रसों में बुद्धि और स्थिति डगमग होती है तो परखने की शक्ति कम हो जाती है और न परखने के कारण माया अपना ग्राहक बना देती है।

17) वर्तमान समय विश्व कल्याण करने का सहज साधन अपने श्रेष्ठ संकल्पों की एकाग्रता द्वारा, सर्व आत्माओं की भटकती हुई बुद्धि को एकाग्र करना है। सारे विश्व की सर्व आत्मायें विशेष यही चाहना रखती हैं कि भटकी हुई बुद्धि एकाग्र हो जाए वा मन चंचलता से एकाग्र हो जाए। यह विश्व की मांग वा चाहना तब पूरी कर सकेंगे जब एकाग्र होने का अभ्यास होगा।

18) सदा एक बाप दूसरा न कोई, इसी स्मृति से एकाग्रता को बढ़ाओ। निरन्तर एकरस स्थिति में स्थित होने का विशेष अभ्यास करो। इसके लिए एक तो व्यर्थ संकल्पों को शुद्ध संकल्पों में परिवर्तन करो। दूसरा माया के आने वाले अनेक प्रकार के विघ्नों को ईश्वरीय लगन के आधार से सहज समाप्त करते, कदम को आगे बढ़ाते चलो।

19) बुद्धि को एकाग्र करने के लिए मनमनाभव के मंत्र को सदा स्मृति में रखो। मनमनाभव के मंत्र की प्रैक्टिकल धारणा से पहला नम्बर आ सकते हो। मन की एकाग्रता अर्थात् एक की याद में रहना, एकाग्र होना यही एकान्त है। अभी अपने को एकान्तवासी बनाओ अर्थात् सर्व आकर्षणों के वायब्रेशन से

अन्तर्मुख बनो। अब यही अभ्यास काम में आयेगा।

20) मन्सा सेवा करने के लिए सदा एकाग्रता का अभ्यास चाहिए। इसके लिए व्यर्थ समाप्त हो, सर्व शक्तियों का अनुभव जीवन का अंग बन जाये। जैसे बाप परफेक्ट है ऐसे बच्चे भी बाप समान हों, कोई डिफेक्ट न हो।

21) एकाग्रता अर्थात् एक ही श्रेष्ठ संकल्प में सदा स्थित रहना। जिस एक बीज रूपी संकल्प में सारा वृक्ष रूपी विस्तार समाया हुआ है। एकाग्रता को बढ़ाओ तो सर्व प्रकार की हलचल समाप्त हो जायेगी। एकाग्रता के आधार पर जो वस्तु जैसी है, वैसी स्पष्ट देखने में आयेगी। ऐसी एकाग्र स्थिति में स्थित होने वाला स्वयं जो है, जैसा है अथवा जो वस्तु जैसी है वैसी स्पष्ट अनुभव होगी।

22) आजकल की दुनिया में राजनीति की हलचल, वस्तुओं के मूल्य की हलचल, करैन्सी की हलचल, कर्मभोग की हलचल, धर्म की हलचल – ऐसे सर्व प्रकार की हलचल से हर एक तंग आ गये हैं। इससे बचने के लिए एकाग्रता को अपनाओ, एकान्तवासी बनो। एकान्तवासी से एकाग्र सहज ही हो जायेंगे।

23) परमार्थ मार्ग में विघ्न-विनाशक बनने का साधन है - माया को परखना और परखने के बाद निर्णय करना क्योंकि परमार्थी बच्चों के सामने माया भी रॉयल ईश्वरीय रूप रच करके आती है, जिसको परखने के लिए एकाग्रता अर्थात् साइलेन्स की शक्ति को बढ़ाओ।

24) बीच-बीच में संकल्पों की ट्रैफिक को स्टॉप करने का अभ्यास करो। एक मिनट के लिए संकल्पों को, चाहे शरीर द्वारा चलते हुए कर्म को रोककर बिन्दू रूप की प्रैक्टिस करो। यह एक सेकेण्ड का भी अनुभव सारा दिन अव्यक्त स्थिति बनाने में मदद करेगा।

25) किसी भी प्रकार का विघ्न बुद्धि को सताता हो तो योग के प्रयोग द्वारा पहले उस विघ्न को समाप्त करो। मन-बुद्धि में जरा भी डिस्टरबेन्स न हो। अव्यक्त स्थिति में स्थित होने का ऐसा अभ्यास हो जो रूह, रूह की बात को या किसी के भी मन के भावों को सहज ही जान जाये।

26) ब्राह्मणों की भाषा आपस में अव्यक्त भाव की होनी चाहिए। किसी की सुनी हुई गलती को संकल्प में भी न तो स्वीकार करना है, न कराना है। संगठन में विशेष अव्यक्त अनुभवों की आपस में लेन-देन करनी है।

27) जैसे अभी सम्पर्क में आने वाली आत्माओं को ईश्वरीय स्नेह, श्रेष्ठ ज्ञान और श्रेष्ठ चरित्रों का साक्षात्कार होता है, ऐसे अव्यक्त स्थिति का भी स्पष्ट साक्षात्कार हो। जैसे साकार में

ब्रह्मा बाप अन्य सब जिम्मेवारियाँ होते हुए भी आकारी और निराकारी स्थिति का अनुभव कराते रहे, ऐसे आप बच्चे भी साकार रूप में रहते फरिश्तेपन का अनुभव कराओ।

28) चाहे कोई भी साधारण कर्म भी कर रहे हो तो भी बीच-बीच में अव्यक्त स्थिति बनाने का अटेन्शन रहे। कोई भी कार्य करो तो सदैव बापदादा को अपना साथी समझकर डबल फोर्स से कार्य करो तो स्मृति बहुत सहज रहेगी। स्थूल कारोबार का प्रोग्राम बनाते बुद्धि का प्रोग्राम भी सेट कर लो तो समय की बचत हो जायेगी।

29) कोई भी कर्म करते सदैव यही स्मृति रहे कि हर कर्म में बापदादा मेरे साथ भी है और हमारे इस अलौकिक जीवन का हाथ उनके हाथ में है अर्थात् जीवन उनके हवाले है। फिर जिम्मेवारी उनकी हो जाती है। सभी बोज़ बाप के ऊपर रख

अपने को हल्का कर दो तो कर्मयोगी फरिश्ता बन जायेंगे।

30) सदा यही लक्ष्य याद रहे कि हमें बाप समान बनना है तो जैसे बाप लाइट है वैसे डबल लाइट। औरों को देखते हो तो कमजोर होते हो, सी फादर, फालो फादर करो। उड़ती कला का श्रेष्ठ साधन सिर्फ एक शब्द है - 'सब कुछ तेरा'। 'मेरा' शब्द बदल 'तेरा' कर दो। तेरा हूँ, तो आत्मा लाइट है। और जब सब कुछ तेरा है तो लाइट (हल्के) बन गये।

31) अभी मन्सा की क्वालिटी को बढ़ाओ तो क्वालिटी वाली आत्मायें समीप आयेंगी। इसमें डबल सेवा है - स्व की भी और दूसरों की भी। स्व के लिए अलग मेहनत नहीं करनी पड़ेगी। प्रालब्ध प्राप्त है, ऐसी स्थिति अनुभव होगी। इस समय की श्रेष्ठ प्रालब्ध है "सदा स्वयं सर्व प्राप्तिओं से सम्पन्न रहना और सम्पन्न बनाना"।

शिवबाबा याद है ?

ओम् शान्ति

01-03-14

मधुबन

## “त्याग तपस्या के आधार पर सेवा हो तो विघ्न समाप्त हो जायेंगे”

(दादी जानकी)

बाबा मिला सब कुछ मिला, दिल में समाया। बाबा अब प्रैक्टिकली निर्विघ्न स्थिति, निर्विघ्न सेवा देखना चाहते हैं। विघ्न क्या होता है? जिसके पास तीन बातें हैं उसके पास विघ्न आ नहीं सकता। विघ्न नाम सुनते ही घबराहट आती है, अगर आता है तो छोड़ता नहीं है। अलबेलापन और सुस्ती विघ्न ले आते हैं, जिसको समय का कदर नहीं है वही अलबेलेपन में रहता है। बाबा का प्यार बहुत शक्ति देता है। दुनिया एक खेल है, खेल को साक्षी होकर देखना है और खुद प्ले करते समय बाबा को साथी बनाना है। यह कभी भूल नहीं जाना। बाबा के साथ का अनुभव बतलाया नहीं जाता है और जी चाहता है, ऐसा अनुभव हर बाबा का बच्चा करे और अनुभव से मूर्ति बन जाए।

कोई भी ऐसा देश नहीं होगा जहाँ मन्दिर न हो। मन्दिर है तो मूर्ति भी जरूर होगी ही। जिसको सारी दुनिया ढूँढ रही है उसने हमें ढूँढ लिया, तो हम किसके बच्चे हैं? कैसी यूनिवर्सिटी के स्टूडेंट हैं? उस स्थिति में स्थित रहो तो बाप का नाम बाला हो। अभी ऐसा कोई प्रोग्राम बनें जो सारी विश्व में कोई कोना न रहे जिनको यह पता न पड़े कि हम कौन-सी पढ़ाई पढ़ रहे हैं और उससे क्या बनेंगे! ऐसी यूनिवर्सिटी के स्टूडेंट बनना और उसी नशे में रहना।

परमात्मा बाप ने पवित्रता की शक्ति जो भरी है, अन्दर बल दिया है उसी आधार से आप सब यहाँ बैठे हो। जितना जिसमें पवित्रता की शक्ति आई है वो सच ही बतायेगा, उसकी लाइफ दिखायेगी, वो ज्ञान न भी बोले, तो भी जितना त्याग उतनी तपस्या फिर उतनी सेवा होगी। इसके लिए ऐसे नहीं घर छोड़के आ जाओ नहीं, घर में रहो परन्तु कमलफूल समान रहो, स्वदर्शन चक्रधारी बने। बाबा कहते तुम कल्प पहले वाले वही हो, मेरे हो, स्वराज्याधिकारी हो, त्रिनेत्री, त्रिकालदर्शी तीनों लोकों के मालिक हो। पहले तो हमारी प्रैक्टिकल लाइफ से स्थापना हुई फिर कोर्स कराना शुरू हुआ। संकल्प में बाबा, ड्रामा की नॉलेज न्यारा कमल फूल समान बना देती है।

डबल विदेशी बाबा की नॉलेज को धारण करने में बहुत होशियार हैं। बापदादा भी इन्हें देखकर बहुत खुश होता है। इन्होंने बाबा की भावना को समझा है, विश्वास रखा है, उसका बल इनको साथ दे रहा है। सच्ची भावना, श्रेष्ठ कामना (जिसमें स्वार्थ नहीं पर सच्चाई है, वह कामना) तो सच्चाई और प्रेम, खुशी और शक्ति जो भगवान ने वर्से में दी है, वह सदा साथ रहे।

जो सच्चा बनते हैं वह बाबा का प्यार खींचते हैं। भले कितने

साल के बाद भी मिलें, कोई सामने बैठा हुआ भी इतना प्यार नहीं खींचेगा, वो खींच रहा है। वह इस अनुभव के आधार से चल रहे हैं। ऐसे बच्चों को बाबा सदा ही साथ देता है। बाबा के साथ चलना है ना। हम सब यात्रा पर हैं, कोई में भी मोह नहीं है। कभी भी यह भूल नहीं करना, मेरा नाम हो...। इतना मैंने काम किया है... अरे, तुमने काम किया है? भाग्य है, जो बाबा ने ऐसे काम में सहयोगी बनाया है। सेवा भावना है, नाम के लिए काम नहीं

कर रहे हो, सेवा भाव से कर रहे हो, उसकी खुशी शक्ति चला रही है। मुझे कोई नाम नहीं चाहिए पर प्रभु का प्यार, दुआयें चाहिए। वो प्यार समझाया नहीं जाता है। डायरेक्ट भगवान दुआयें देवे और सबसे दुआयें दिलावे! तो मैं आप लोगों को राय देती हूँ, दुआयें लो दुआये दो, बाकी कोई से न नाम चाहिए, न मान चाहिए, न शान चाहिए, कुछ नहीं चाहिए। मांगने से मरना भला। ओम् शान्ति।

दूसरा क्लास 3-3-14

## “सभी की ओर से जयन्ती बहन के प्रश्न - दादी जानकी जी के उत्तर”

दादी जानकी

अभी ऐसी रूहरिहान करें और मौज में रहें जो बाबा कहे वन्दरफुल बच्चे हैं और हम कहे वन्दरफुल बाबा है, और कुछ भी बातें बुद्धि में हैं ही नहीं। तो ऐसी मीठी मीठी बातों के सिवाए और कोई बात नहीं है तब कहेगे वन्दरफुल ड्रामा।

**जयन्ती बहन:-** दादी, बाबा ने हमें होमवर्क दिया था दो सप्ताह का परन्तु आप कहते हैं कि दो सप्ताह में लिए भी क्यों रूके, आज ही कर लो तो बतायेंगे कि आज हमको क्या करना होगा?

**दादी जी:-** आज की मुरली सुनी या पढ़ी होगी, अन्तर्मुखता और बाह्यमुखता का जो अन्तर है, उसको मिटाना है। ऐसा कोई संकल्प वा व्यर्थ चिन्तन चला तो वह जमा की हुई कमाई खत्म कर देता है। जैसे आज बाबा ने बोला मैं आत्माओं से बात कर रहा हूँ, तो हम भी जीवात्मा समझके बात करते हैं! अपने को आत्मा समझके बाबा की बात सुन रहे हैं। तो पुरुषार्थ का जो सही रूप, असली रूप है वो मैं कहती हूँ आज कर लें, अब कर लें, उसमें देरी मत करो। इसमें अन्तर्मुखता, एकांत बहुत चाहिए। बुद्धि को एकाग्र करने, स्थिति को स्थिर वा अचल-अडोल बनाने की जो विधि है ना, उसका जब अनुभव होता है तो दिल में और कोई बात नहीं रहती है। पहले खुद के लिए अच्छी भावना हो, फिर एक दो में भी अच्छी भावनायें हो।

अन्तर्मुखता से बाबा के साथ कनेक्शन अच्छा रहता है, अन्तर्मुखता में सब सहज लगता है। अन्तर्मुखता में टाइम बड़ा अच्छा सफल हो रहा है, तो आज यह पुरुषार्थ कर लो, कल ऑटोमेटिकली वो खींच होगी पुरुषार्थ में, कोई भी प्रकार की स्थूल चीज़ की, स्थूल बात वा स्थूल व्यक्ति की जरा भी खींच न हो, तब एक के अन्त में जाना सहज लगेगा। तो यह पॉसिबुल है

ना, इज़ी है। सिर्फ और किसी बात को याद नहीं करो। वर्तमान में यह बड़ा यूज़फुल समय है इसलिए इसे अच्छी तरह से सफल करो। सम्पन्नता में थोड़ी भी कमी है तो सम्पूर्ण नहीं बनेगे इसलिए दिल में जो भावना है उसे कैच करके उससे फायदा उठाओ।

रियलाइजेशन के बिगर परिवर्तन नहीं आता है, रियलाइजेशन शब्द का अर्थ मम्मा से सीखा है। बाबा की मुरली से कोई न कोई बात ऐसे लग जाती है जो सहज परिवर्तन हो जाता है। दिल से लगता है कि यह बात बाबा ने सभा में नहीं बोली पर पर्सनली मेरे को बोला है। रियलाइजेशन से फौरन चेकिंग होती है। सम्बन्ध में सच्चाई और प्रेम होने के कारण आपस में सूक्ष्म सहयोग मिल जाता है। कोई भी बातों में अगर टाइम वेस्ट नहीं है तो बाबा की बात को कैच करना इज़ी हो जाता है। इतने जब डीप अनुभव होते हैं तो कोई निकम्मी बात बुद्धि में आ नहीं सकती। अगर आ गई तो न समय की वैल्यु, न संकल्प की वैल्यु, न ही बाबा की टर्चिंग। सारा यज्ञ बाबा की टर्चिंग से चल रहा है, परन्तु यह भूल जाते हैं।

**जयन्ती बहन:-** दादी, आप बहुत ऊंची श्रेष्ठ बातें बता रहे हैं परन्तु कोई कोई ब्राह्मण नाउम्मीद हो जाते हैं, या कोई न कोई प्रश्नों में चले जाते हैं, आप इसको स्पष्ट करेंगे?

**दादी जी :-** नाउम्मीद तभी होते हैं जब कोई बात एक्सेप्ट (स्वीकार) नहीं करते हैं। कोई न कोई पिछली बातें बुद्धि में अन्दर बैठी हुई हैं। कोई न कोई बात का दुःख, द्वेष भाव है तो वह नाउम्मीद बना देता है। परन्तु हिम्मत है तो हिम्मत से बाबा की मदद का फौरन अनुभव होता है। कुछ भी है तो योग में बैठ

जाओ, योग से जीवन में परिवर्तन आयेगा। एक के परिवर्तन से अनेकों का परिवर्तन हो जाता है। लेकिन शर्त है ऐसे पॉजिटिव, हिम्मत बच्चे मददे बाप, सच्ची दिल है तो ऑटोमेटिक साहेब मेरे से राज़ी है। मैं अकेली नहीं हूँ, साहेब असम्भव बात भी सम्भव करके दिखाता है। सिर्फ हिम्मत और सच्चाई चाहिए। कोई भी कारण से उमंग उल्लास कम न हो। इसके लिए किसी की कमी को न देखो, अगर किसी की कमी को देखते हैं तो वो कमी मेरे में आ जाती है, इससे मेरा उमंग-उत्साह कम हो जायेगा। पहले एक की देखी फिर दूसरे की देखी फिर एक दो को सुनाई... तो जैसे बीमारी फैल जाती है। इस बीमारी से जो बचा हुआ है वो सेफ है। पुरुषार्थ में सदा हर्षित रह एक दो को सहयोग देना, यह हमारा काम है। इस सहयोग से हिम्मत दे सकते हैं। जो बात सही है, वह करनी है, जो दिल को नहीं जँचती है वह नहीं हो सकती। तो स्थिति अच्छी रहे, शान है। परिवार में भी शान है और बाबा से नॉलेज, पालना कितनी मिल रही है वो हमारे चेहरे चलन से सेवा कर रही है।

**जयन्ती बहन:-** आपका यही मतलब है कि यदि हिम्मत है तो कभी भी नाउम्मीद नहीं होंगे और कभी भी डिप्रेशन में नहीं आयेगे, ऐसे?

**दादी जी:-** हिम्मत है, बाबा की मदद ली, फिर एक दूसरे से सच्चाई, स्नेह और समझ से सम्बन्ध है तो नाउम्मीद हो ही नहीं सकते। वह ऐसे कभी नहीं कहेंगे कि मैं इसके साथ नहीं चल सकती हूँ। कोई कहेंगे कि इसका स्वभाव ऐसा है, मैं सच बताती हूँ ना, यह ऐसी है... यह जो संकल्प है ना, आखिर डिप्रेशन में लेके जाते हैं। अच्छी बात करने की शक्ति चली जाती है। भले कोई भी कारण है, मैं कहती हूँ झूठा है, कारण है ही नहीं। यह कारण नहीं है वो तो आया चला भी गया। आप वह कारण वर्णन कर रही हो! जिसकी जो भी नेचर है वो अन्दर से चेंज हो जाये, प्रैक्टिकल है, डिप्रेशन के कारण ऐसी अच्छी बातें सोचते नहीं हैं तो निकम्मी बातें नाउम्मीद बना देती हैं। अच्छी बातें सोचने का उसके पास टाइम ही नहीं है, उससे ताकत कितनी मिलती है, वो अनुभव नहीं है, वैल्यु नहीं है। अगर वैल्यु का पता तो कहाँ से कहाँ पहुँच जायें।

अन्दर से है कि जब तक शरीर में आत्मा है तब तक बाबा जो चाहना रखता है, वह पूरी करेंगे। एक है बिन्दू बाबा, दूसरा बूढ़ा बाबा। बिन्दू बाबा कहता है बिन्दी लगाओ, बूढ़ा बाबा कहता है मेरे को देखो तो जवानी आ जाती है, ताकत आ जाती है। जो ऐसी बातें नहीं सोचते हैं, ऐसा पुरुषार्थ नहीं करते हैं तो निकम्मी बात सोचने की सजा है - डिप्रेशन। डिप्रेशन अच्छी-अच्छी आत्माओं को हो जाता है, कोई भी कारण होगा।

बाबा हम बच्चों को इतना श्रेष्ठ ज्ञान दे रहा है, मान लो किसी नज़दीक के संबंधी ने शरीर छोड़ा तो उसे अच्छे वायब्रेशन दो। उसके बारे में सोच-सोच कर आंसू नहीं बहाओ। मैंने देखा है जो हमारे कनेक्शन में रहे हैं, कभी डिप्रेशन में नहीं आये हैं। तो अपनी कम्पनी (संग) ऐसा रखना चाहिए, अच्छी बातें सोचने सुनने के लिए, क्योंकि डिप्रेशन की बीमारी और ही निकम्मा बना देती है, फिर अपने को ही नहीं सम्भाल सकते हैं। सेवा के लिए कोई टचिंग नहीं आ सकती है। योग का प्रोग्राम होगा और जबरदस्ती बैठेंगे तो योग लगेगा नहीं। तो अगर जरा भी किसी में थोड़ा भी डिप्रेशन हो, मेहरबानी करो इससे छूट जाओ, ऐसा जीवन नहीं जिओ।

**जयन्ती बहन:-** दादी - एक है कि हम दूसरों की कमी देखते हैं और दूसरा है कि हम खुद की कमी देखते हैं, तो इन दोनों बातों का कनेक्शन क्या है? दूसरों की कमी देखना चाहे अपनी कमी देखना...।

**दादी जी:-** दूसरों की कमी देखना माना देह-अभिमान है। अपने को अच्छा समझते हैं, भले अच्छा न भी समझे, पर कमी न देखें, अच्छाई देखें, यह भाग्य है। मुझे और तो कुछ काम नहीं है, मैं ऐसे साक्षी हो करके बैठती हूँ तो मुझे किसी की कमी नज़र नहीं आती है। भले आप सुनायेगी तो सुनेंगी लेकिन उसकी निकल जाये, संकल्प पहुँच जाए, जगह भर देते हैं, खाली नहीं छोड़ते हैं। यह एक पुण्य कर्म का खाता है। किसकी थोड़ी कोई कमी देखी तो यह पाप है और हम क्या पाप करेंगे? अभिमान कमी दिखाता है, अपने को अच्छा समझते हैं। फिर जब अपनी कमी देखी, मेरे से देखो इनका पार्ट ऊंचा है, इनको अच्छा समझते हैं, इनको मीटिंग में बिठाते हैं, इनको यह करते हैं... मेरे को तो नहीं करते हैं, ऐसा ख्याल आना माना औरों से भेंट करना, औरों को अच्छा समझना, अपने को कम समझना। बाबा कहते अपने को आत्मा समझो, मेरे को देखो मुझे याद करो। मैं यह नहीं कहती हूँ कि मेरे में कोई कमी नहीं है, पर फौरन चेंज करूँ और बाबा की शक्ति से चेंज हो जाते हैं। सच्चाई और विश्वास है तो हो जाता है। जैसे कभी कोई प्रोसेशन निकलता है तो सबसे आगे एक मशाल पकड़ने वाला होता है, उसके बिगर शोभेगा नहीं। अभी सारे विश्व में आप सब मशाल की तरह ऐसे मिसाल बनो जो सब कहें फलानी हमारे पास आई और बहुत अच्छी सेवा करके गई। भले कुछ भी है। सब मेरे से होशियार हैं, सब पढ़े लिखे हैं, मुझे यह मोबाइल, कम्प्यूटर आदि कुछ नहीं आता है परन्तु सूक्ष्म, सच्चाई, प्रेम ने एवरहेल्दी, वेल्दी, हैपी रहने का बाबा ने वरदान दे दिया है। तो जो बाबा से यह वरदान लेगा वो नाउम्मीद क्यों होगा!

जैसे किसी के सामने खाना अच्छा रखा है, लेकिन मेरे दांत में दर्द है, चबा नहीं सकती हूँ तो नहीं खा सकेंगी। खाना तो अच्छा है पर अन्दर से कोई भी दर्द है, तकलीफ है मानो पेट में कोई गड़बड़ है, तो खाना होते भी खा नहीं सकते हैं। तो चबाने के लिए दांत चाहिए, हज़म करने के लिए शक्ति चाहिए। यह जो ज्ञान इतना ऊंचा मिलता है कईयों को हज़म नहीं होता है। ज्ञान अच्छा है, पर उठा नहीं सकते हैं। इगो या एंगर हज़म करने

नहीं देता। कोई अपने लिए सोचते कुछ और हैं, होता कुछ और है तो उसका दुःख होता है। मैंने सोचा था यह होगा, नहीं हुआ... तो आजकल सूक्ष्म अपनी सेफ्टी रखने के लिए साफ रहने के लिए शुद्ध विचार ऐसा हो जो सभी के दिल से निकले यह सहज है, करने योग्य है। फिर एक दो की मानी, एक कहे दूसरा मान ले तो दोनों हैं ज्ञानी। इतनी श्रेष्ठ बातें इतनी अच्छी हैं उनको छोड़कर घटिया बात क्यों करें? फिर भी हम रॉयल फैमिली के हैं। अच्छा, ओम् शान्ति।

## “सदा मौज की स्थिति में बेफिक्र रहना है तो श्रीमत पर ट्रस्टी बनकर चलते रहो”

(गुल्जार दादी जी)

बाबा ही हमारा संसार है, संसार में सम्बन्ध होते हैं, पदार्थ होते हैं, उसमें सिर्फ प्रेम व खुशी चाहिए। तो हमारा यह भाग्य है जो एक ही बाबा में सबकुछ मिला है। बाप भी एक ही है, शिक्षक भी एक ही है और सतगुरु भी एक ही है क्योंकि जीवन में यह तीन सम्बन्ध जरूर होते हैं। तो वो तो अलग-अलग होते हैं और हमारे लिए एक में तीनों ही सम्बन्ध हैं और जो भी बनाओ क्योंकि एक ही परमात्मा के लिए कहते हैं - सब कुछ है। बन्धू भी है, सखा भी है जो बनाओ वो बन जाता है, ऐसा बाबा हमको मिला है। बच्चे के रूप में भी बाबा को देख सकते हैं। जिस सम्बन्ध से आपका प्यार हो उसी सम्बन्ध से एक निराकार बाबा को देख सकते हैं। तो और संसार में रहा क्या?

जब यह निश्चय कर लेते हैं कि बाबा ही हमारा संसार है तो और कोई चीज़ रही नहीं। अगर आप प्रवृत्ति में भी रहे हुए हैं तो बाबा के डायरेक्शन से रहे हुए हैं। अगर हमको यह याद है कि हम बाबा के डायरेक्शन से रहे हुए हैं, तो आप कभी भी प्रवृत्ति में रहते, प्रवृत्ति के वश नहीं होंगे क्योंकि बाबा के डायरेक्शन से रहे हुए हैं, तो हमको खिलाने वाला बाबा है, चाहे अपना धन्धा करते हो, नौकरी करते हो, उससे पैसा आता है लेकिन दिलाने वाला कौन? हम तो अभी ट्रस्टी हो गये ना। जो भी प्रवृत्ति वाले बैठे हैं वो सब अपने को ट्रस्टी समझते हैं? पक्का! अगर ट्रस्टी हैं तो बहुत मौज में रहेंगे क्योंकि जिम्मेवार बाबा है, जिसने ट्रस्टी बनाया है। बाबा की श्रीमत पर ट्रस्टी बन चलते रहो तो सदा बेफिक्र बादशाह की तरह रहेंगे। तो जो बाबा के पक्के ट्रस्टी बच्चे हैं उन्हीं के लिए गैरन्टी है, कभी भी बाबा का बच्चा भूख नहीं मर सकता है। वो भूखा हो ही नहीं सकता है, अन्त तक दाल-रोटी जरूर मिलेगी। उसके लिए बाबा बंधा हुआ है। नाम भल प्रवृत्ति है लेकिन रहना है पर वृत्ति में माना न्यारा और प्यारा

होके रहना है। ट्रस्टी माना जिम्मेवार दूसरा है। तो प्रवृत्ति में रहना माना पर वृत्ति में रहना, यह मानकर चल रहे हैं तो बाबा की गैरन्टी है।

अभी एक जन्म बाबा के बने तो 21 जन्म के लिए भगवान की गैरन्टी है कि आपको कभी दुःख अशान्ति का नामनिशान ही नहीं आयेगा, इतनी गैरन्टी कोई दे सकता है? बच्चा माना बाप के सिवाए और कुछ नहीं। उसका आधार है श्रीमत। श्रीमत कितनी अच्छी है, सवरे उठने से लेकर रात को सोने तक श्रीमत हर कदम की मिली हुई है। एक है सोचना - यह करूँ या न करूँ, ऐसे करूँ या वैसे करूँ, ये तो बाबा कहता है कदम पर कदम रखो, श्रीमत दे दिया है, कदम बनाके दे दिया है, सुबह को ऐसे उठो, रात को ऐसे सोओ, दिन में ऐसे कामकाज करो, इस तरह से रास्ता बनाके दिया है, उस पर चलना है सिर्फ बस। सोचना नहीं है। रास्ता ठीक है या नहीं ठीक है, मंजिल पर पहचूँगा या नहीं पहचूँगा, रास्ता ठीक है तब तो ब्रह्मा बाबा मंजिल पर पहुंच गये ना। तो बस उसी के पाँव पर पाँव रखो यानि जो बाबा ने किया है वो करो, बस। कोई भी संकल्प आता है तो सिर्फ टेली करो (मिलाओ) कि बाबा का यह संकल्प था, बाबा के यह बोल, यह कर्म थे? कॉपी करना है बाबा को और किसी को नहीं। फॉलो ब्रदर, फॉलो सिस्टर नहीं कहा जाता है, फॉलो फादर कहा जाता है। तो कितना सहज बाबा ने करके दिया है इसलिए बाबा कहते हैं आपको मेहनत ही क्या है? बाबा से प्यार है, क्या इसकी भेंट किसी से कर सकते हैं? इसके आगे आकाश भी कुछ नहीं है, सागर भी कुछ नहीं है, इतना हमारा बाबा से प्यार है, बाबा का हमारे से है। जिससे प्यार होता है उसको याद करने की आवश्यकता नहीं होती है, भूलने की आवश्यकता होती है। अच्छा।

## दादी प्रकाशमणि जी के अमृत वचन

### “फरिश्ता स्थिति का अनुभव करने के लिए पुराने संस्कारों के किचड़े को समाप्त करो”

आप सभी इस अलौकिक रूहानी भट्टी में बैठे हैं, इस भट्टी का लक्ष्य क्या है? जब लक्ष्य बुद्धि में रहता तो लक्षण आ जाते हैं। हम सबका एक ही दृढ़ संकल्प है कि हमें अपने जीवन में फरिश्ता स्थिति अथवा अन्तःवाहक स्थिति का अनुभव करना है। अनुभवी मूर्त बनना है। इसी पर रोज़ भिन्न-भिन्न प्वाइंट्स की क्लासेज़ चलती क्योंकि जब फरिश्ता बनना है तो सर्व किचड़ा समाप्त करना है। किचड़ा है हमारे पुराने संस्कारों का। संस्कार परिवर्तन की सहज युक्ति क्या है? ऐसी सहज युक्ति हो जो सहज ही अपने को परिवर्तन कर सकें। कई कहते हैं संस्कार परिवर्तन बड़ा मुश्किल है। लेकिन हम सबका इस अलौकिक जन्म का पहले दिन से ही फाउन्डेशन है परिवर्तन। तो पहले अपनी ऊंची फरिश्ता स्थिति पर खड़े होकर पूछो कि क्या फरिश्ता कहेगा कि यह मेरे कड़े संस्कार हैं। कभी फरिश्ता ऐसे कहेगा कि यह किचड़ा मेरे में है। जब फरिश्ता स्थिति में यह जवाब नहीं मिलता, तो यह फरिश्ता स्थिति दूसरों का गायन है या यह हमारी ही अन्तिम स्थिति का वर्णन है? वह फरिश्ता आत्मायें हम हैं, हमारा ही रूप है, हमें ही होना है या और किसी को? बाबा ने यह स्मृति दिलाई तुम थे और तुम्हें ही बनना है। ऐसे ही अगर सवाल उठता संस्कार परिवर्तन का, तो पहले हम यह सवाल पूछती कि जब बाबा के पास आये तो यह ज्ञान था क्या कि हम आत्मा हैं और हम आत्मा का यह परमात्मा बाप है। यह हमारा अन्तिम जन्म है। हम आत्मा अब ब्राह्मण सो देवता पार्ट बजाने वाली हैं और हमें अब वाया सूक्ष्मवतन घर जाना है? यह लेसन तो सबको पक्का है ना? यह पहले जानते थे क्या? बाबा रोज़ अमृतवेले यही पाठ पढ़ाता कि स्वयं को आत्मा स्थिति में स्थित करो और सबको आत्मा रूप में देखो तथा बाप को याद करो। यही सिम्पल लेसन रोज़ का मंत्र है। मनुष्य राम-राम का मंत्र जपते हैं और हम यह मंत्र जपते। हमारा मंत्र जपने तक नहीं है लेकिन हमारा वह स्वरूप है। तो यही पहला लेसन हमारी बुद्धि को परिवर्तन करता। बाबा हमें कितना मीठा पाठ पढ़ाते - हे मीठी-मीठी आत्मायें, मैं परमात्मा तुम आत्माओं को पढ़ाता हूँ। ऐसा लेसन कोई भी देहधारी नहीं पढ़ा सकता। कितनी लवली लाइन हम रोज़ सुनते हैं कि मैं निराकार बिन्दू हूँ - जो परम हूँ, मैं तुम आत्माओं को पढ़ाता हूँ। मैं परमात्मा इन आँखों से देखा नहीं जाता। तो यह पहला लेसन ही बुद्धि को परिवर्तन कर देता है। यही फर्स्ट सो लास्ट परिवर्तन करने का आधार है। जो कहते मेरे संस्कार परिवर्तन नहीं होते उनसे मैं पूछती तुमने यह पहला पाठ पढ़ा कि तुम फलाने माँ बाप की, फलाने कुल की नहीं, तुम आत्मा हो? तुम ब्रह्माकुमार कुमारी हो।

तुम्हारा स्वधर्म शान्त है। तुम सबका एक घर है, एक बाप है, एक धर्म है, एक कुल है, एक परिवार है। यहाँ धर्म भेद, भाषा भेद, जाति भेद नहीं है क्योंकि हम सब आत्मायें एक बाप के बच्चे हैं। बाबा ने सहज प्रैक्टिस कराई कि तुम दो नहीं, तेरी दो बहनें नहीं, तेरे दो भाई नहीं। हमें तो बाबा ने पहले दिन से ही अकेला बना दिया। खुद की सब गृहस्थी खत्म कर दी। हम सब खुदाई खिदमतगार हैं। हमारी सेवा भी एक है, प्रवृत्ति भी एक है इसलिए हमें न कोई 10 धन्धे हैं, न 10 व्यवहार हैं, न 10 दुकान हैं, हम सब जो भी ब्राह्मण हैं, सारा भारत वा सारा विश्व, हम सब एक हैं। बाबा ने दूसरी अंगुली उठाने ही नहीं दिया। क्या बाबा ने कोई को प्रॉपर्टी की हद लिखकर दी है कि इतना परेशान तुम्हें मिलेगा। यह परिवार तेरा है। या बाबा ने कहा कि मैं तुम सबका पिता हूँ, तुम सब भाई-भाई हो। मैं तुम्हें विश्व का मालिक बनाता हूँ। दुनिया वाले जमीन भेद, आकाश भेद, अनेक भेद करते। हमें कौन सा भेद बाबा ने दिया है? कोई कहे मुझे तो यही दो भाई प्रिय हैं, यही दो बहनें प्रिय हैं। ऐसे कभी बाबा ने छुट्टी दी है क्या कि तुम इनके ही प्रिय बनो। क्या बाबा ने यह लिखकर दिया है कि यह स्टूडेंट जो क्लास के हैं यह आपकी प्रॉपर्टी हैं। बाबा ने यह लिखकर दिया है क्या कि यह सेन्टर तुम्हारा जन्म सिद्ध अधिकार है। फिर कैसे कहते यह मेरा सेन्टर, यह मेरे स्टूडेंट। बाबा ने किसी को कोई डिग्री दी है क्या - कि आप इस डिग्री वाले, इस नम्बर वाले ब्राह्मण हो। तुम इस सेन्टर की टीचर इस डिग्री वाली हो। उस पढ़ाई में तो डिग्री मिलती है, हम सबकी एक ही डिग्री है कि तुम ब्राह्मण कुल भूषण स्वदर्शन चक्रधारी हो। यही वन डिग्री सबकी है, दूसरी कोई ग्रेट नहीं। यह भी डिग्री नहीं मिली है कि यह 8 नम्बर वाली है और यह 108 वाली है या यह सूर्यवंशी, चन्द्रवंशी है। तो न मिली है हमें कोई डिग्री और न कोई टाइटल। साकार प्रवृत्ति के लिए मिला तुम ब्रह्माकुमार कुमारी हो। निराकार प्रवृत्ति तू आत्मा भाई-भाई हो। हम आत्मा हैं, तुम भी आत्मा हो, हमें वापस घर जाना है। तो यही रोज़ अभ्यास करते या यह ऐसी शक्ल वाली है, यह ऐसी है, यह वैसी है, रूप को देखते या इस डिब्बी के अन्दर आत्मा को देखते? यही फर्स्ट सो लास्ट लेसन है। अगर यही एक लेसन धारण कर लो तो सारे लेसन उसमें आ जायें। स्वीट आत्मा, स्वीट हमारा बाबा, स्वीट बाबा का परिवार अगर हम इसी स्वीट आत्मा की स्थिति का अनुभव करते रहें, तो अतीन्द्रिय सुख का अनुभव होगा। बुद्धि में जो अनेक बातें घूमती, संकल्प विकल्पों में बुद्धि भटकती, वह सब समाप्त हो जायेगी। अच्छा। ओम् शान्ति।